प्रसार शिक्षा निदेशालय

चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर

फरवरी 2018 महीने के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने फरवरी, 2018 माह के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यो के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

फसल उत्पादन

- प्रदेश के मध्यवर्ती क्षेत्रों में जहाँ गेहूँ की फसल में खरपतवार 2-3 पत्तों की अवस्था में हो वहां खरपतवार नियंत्रण के लिये आइसोप्रोट्रॉन (75 डब्ल्यू. पी.) की 70.ग्रा. व 2,4-डी. की 50 ग्रा. मात्रा प्रति कनाल की दर से 30 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- निचले व मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में सूरजमुखी की ई.सी.-68415 किस्म की बिजाई करें । कतार से कतार की दूरी 60 सै. मी. व पौधों से पौधों के बीच 25-30 सै. मी. का फासला रखें ।

सब्ज़ी उत्पादन

- प्रदेश के निचले पर्वतीय क्षेत्रों में भिण्डी परभनी क्रान्ति, पालम कोमल, पी. 8, अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, तुलसी (संकर), पँचाली (संकर), उमँग (संकर), इन्द्रनील (संकर) तथा फ्रांसबीन कन्टेडर, प्रीमीयर, पालम मृदुला, फाल्गुनी, सोलन नैना, अर्का कोमल की बिजाई का उचित समय चल रहा है। बिजाई के समय भिण्डी में 100 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद, 150 कि. ग्रा. 12:32:16 खाद 50 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 50 कि.ग्रा. यूरिया खाद प्रति हैक्टेयर में डालें। फ्रांसबीन में 200 क्विंटल गोबर की खाद, 310 कि. ग्रा. 12:32:16 खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में डालें।
- भिण्डी व फ्रांसबीन में खरपतवार नियन्त्रण हेतु 3 लीटर लासो (एलाक्लोर) या 4 लीटर स्टाम्प (पैंडिमिथेलिन) प्रति हैक्टेयर की दर से 750 लीटर पानी में घोलकर बिजाई के तुरन्त बाद छिड़काव करें।
- इन्हीं क्षेत्रों में कद्दू वर्गीय सब्ज़ियों जैसे खीरा (लौंग ग्रीन, पाईनसैट, अमृत (संकर), मालिनी (संकर), नं. 243 (संकर) चप्पन कद्दू (पूसा अलंकार, आस्ट्रेलियन ग्रीन), करेला (सोलन हरा, सोलन सफेद, चमन (संकर) पाली (संकर) व घीया (पूसा मंजरी, पूसा मेघदूत, पी. एस.पी.एल.) की सीधी बिजाई भी खेतों में की जा सकती है।
- मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन सब्जियों (टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च) की पनीरी उगाने के लिए उचित समय चल रहा है। जीवाणु झुलसा रोग (वैक्टीरियल विल्ट) प्रभावित क्षेत्रों में इस रोग के लिए प्रतिरोधी किस्मों जैसे टमाटर पालम पिंक, पालम प्राईड, संकर-7711, (अवतार), यश (संकर), हेमसोना (संकर), नवीन 2000+, बैंगन (अर्का निधि, अर्का केशव, हिसार श्यामल व पी.पी.सी.), लाल मिर्च (सूरजमुखी) तथा शिमला मिर्च (योलो वॅडर व कैलिफोर्निया बंडर) का ही चयन करें।
- पनीरी उगाने के लिए 3 मीटर लम्बी, 1 मीटर चौड़ी क्यारियों में 20-25 कि.ग्रा. गली सड़ी गोबर की खाद, 200 ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 15-20 ग्रा. फफूंदनाशक इण्डोफिल एम-45 तथा 20-25 ग्रा. कीटनाशक जैसे फोलीडॉल धूल 5 सैं.मी. मिट्टी की ऊपरी सतह में मिलाने के उपरान्त 5 सैं.मी. पंक्तियों की दूरी पर पतली बिजाई करें।
- खीरा, चप्पन कद्दू, करेला, घीया, तोरी इत्यादि के बीजों को आधा कि.ग्रा. मिट्टी की क्षमता वाले पोलीथीन के लिफाफों में आधा भाग मिट्टी व आधा भाग गोबर की गली सड़ी खाद भरकर 1-2 बीज प्रति लिफाफे में लगाकर बरामदे या पोलीहाऊस में रखें। पौध के तैयार होने तथा उचित मौसम आने पर इसका पौधरोपण करें।

फसल संरक्षण

- भूरी सरसों व राया की फसल में इन दिनों तेले का अत्याधिक प्रकोप होता है। तेले की रोकथाम के लिए फसल पर साइपरमैथरिन-10 ई. सी. या मिथाईल डेमिटान 25 ई.सी. या 60 मि.ली. डाईमिथोएट 30 ई.सी. (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें। दवाई छिड़कने के बाद सरसों के पत्तों को साग के लिए प्रयोग न करें।
- चने में फली-छेदक सुंडी के आक्रमण के प्रति सावधान रहें तथा इसका अधिक प्रकोप होने की स्थिति में तुरन्त NPV (350-500 एल.ई. प्रति हैक्टेयर) के घोल कर छिड़काव करें। 50 प्रतिशत फूल आने पर अजोडिरोक्टिन (0.03 प्रतिशत) अथवा 875 मि.ली. मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. 625 लीटर पानी में प्रति हैक्टेयर या 25 कि.ग्रा. कार्बेरिल 10 डी.पी. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। गोभी प्रजाति की सब्ज़ियों में तेले व सुंडियों के नियन्त्रण के लिए . मैलाथियान 50 ई.सी. (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें। फूल तोड़ने के सात दिन पहले फसल पर छिड़काव न करें। प्याज के रोगों की रोकथाम के लिए इंडोफिल एम-45 या रिडोमिल एम जैड (25 ग्रा. प्रति 10 लीटर पानी) का छिड़काव करें ।

---

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

- जिन क्षेत्रों में गेहूं की रतुआ संवेदनशील किस्मों में पीला रतुआ नामक बीमारी के प्रकोप के आसार दिखते हैं, लक्षणों को देखते ही गेहूं की फसल में टिलट(प्रापिकोनाजोल) 25 ई.सी. का 0.1 प्रतिशत घोल यानि 30 मि.ली. रसायन 30 लीटर पानी में घोलकर स्टिकर डालकर प्रति कनाल की दर से छिड़काव करें व 15 दिन के अन्तराल पर इसे फिर से दोहराएं।

पशुधन

- पशुओं को कुतरा हुआ हरा चारा सूखे चारे के साथ 10:1 के अनुपात में मिला कर खिलायें। दाना मिश्रण में 2 प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण व 1 प्रतिशत नमक मिलाना न भूलें। इस मौसम में पशु ज्यादा मद में देखे जाते हैं अतः पशुओं में गर्माने के लक्षणों की ओर उचित ध्यान दें व ब्यान्त के उपरान्त 2-3 महीने के बीच गर्भाधान करवा लें । यह तभी सम्भव होता है जब पशु का पालन पोषण सन्तोष पूर्ण विधि से हो।
- पशुओं को इस महीने में खुरमूंही बीमारी का टीका अवश्य लगवा लें।
- नवजात बच्चों को परजीवियों से बचाव का उचित ध्यान रखें, व उनके भार का 1/10 वां भाग खीस प्रतिदिन की दर से अवश्य पिलायें।
- पशुओं को ब्याने से दो महीने पहले सुखा दें, तथा इस अवधि में दाना मिश्रण 2 कि.ग्रा. प्रतिदिन की दर से अवश्य खिलाते रहें। गर्भित पशुओं में गर्भाधान सुनिश्चित करने के लिए उनका गर्भ परीक्षण 2-3 महीने के अन्दर-अन्दर अवश्य करवा लें।
- मुर्गीपालन हेतु अच्छे चूजे प्राप्त करने के लिए अच्छी हैचरी में पहले ही अनुबन्ध कर लें। और उनके पालने की जगह पर उचित तापमान के साथ-साथ अच्छा दाना मिश्रण व स्वच्छ जल की भी व्यवस्था करें। पुरानी मुर्गियों को कृमि-रहित करने की भी उचित व्यवस्था करें। अनुत्पादक व बूढ़ी मुर्गियों की छंटनी भी सुनिश्चित करें।
- खरगोशों में फरवरी के अन्त में प्रजनन करवा सकते हैं ताकि मार्च के अन्त या अप्रैल के शुरू में ही बच्चे प्राप्त किये जा सकें। खरगोशों की ऊन न उतारें। खानपान, स्वच्छ जल व उचित तापमान की उचित व्यवस्था करें।
- मच्छली पालने के तालाबों में देशी खाद डाली जा सकती है। छोटी अंगुलिकाओं के पोषण की भी उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें।

किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें । अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) (01894-230395) से भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

उत्तम 6.02.18

निदेशक
प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशलय, चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर द्वारा किसानों के हित में जारी ।

प्रतिलिपि :

1. सयुंक्त निदेशक (सूचना व जनसम्पर्क), चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला (हि.प्र.)
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय को बेवसाइट में अपलोड हेतू प्रेषित।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/- 10557-59   Dated : 6/2/18

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

SND 7/1